प्रश्न:-शीत युद्ध उत्तर काल में एक ध्रुवीय विश्व में अमेरिका की वर्चस्व नीति का परीक्षण कीजिए?

द्वारा:-डॉ. कुमार राकेश रंजन
सहायक प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान
लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय, मोतिहारी

उत्तर:-सोवियत संघ के विघटन और शीत युद्ध के अंत के बाद विश्व में अमेरिका एकल महाशक्ति के रूप में उभरा और विश्व राजनीति द्विध्रुवीय से एक ध्रुवीय हो गई।अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व में अपने प्रभाव को जमाने के लिए दो प्रकार की नीतियां अपना रहा है:-
१.नई विश्व व्यवस्था की स्थापना का प्रयास
२.प्रभुत्व की स्थापना
१.नई विश्व व्यवस्था और अमेरिकी प्रभाव:- अमेरिका ने खाड़ी संकट-I की कार्यवाही के पश्चात नई विश्व व्यवस्था की स्थापना की घोषणा की। अमेरिकी राष्ट्रपति सीनियर जॉर्ज बुश ने कहा कि अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व में पुलिस मैन की भूमिका निभाएगा। जहां भी उसे अन्याय दिखाई देगा, वह कार्यवाही करेगा।अमेरिका ने नई विश्व व्यवस्था की स्थापना हेतु निम्नलिखित कार्रवाई की है :- A.Operation Infinite Reach- वर्ष 1998 में अमेरिका ने नैरोबी और दरारे-सलाम के अमेरिकी दूतावासों पर बमबारी के जवाब में अलकायदा आतंकवादी संगठन के सूडान और अफगानिस्तान ठिकानों पर कई बार क्रूज़ मिसाइलों से हमले किए। अमेरिका ने अपनी इस कार्यवाही के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ और अंतरराष्ट्रीय कानूनों की परवाह भी नहीं की।
B.Kosovo Action- वर्ष 1999 में अमेरिकी नेतृत्व वाले NATO ने कोसोवो की स्वतंत्रता के लिए सबिंया प्रांत को निशाना साधा, जिसके कारण युगोस्लाविया से मोंटेनीग्रो अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र बन गया और सबिंया में अस्थिरता एवं अराजकता की स्थिति बन गई।
C.9/11 की घटना और आतंकवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी युद्ध:- 11 सितंबर 2001 के दिन अमेरिका के न्यूयॉर्क स्थित WTC और वर्जीनिया स्थित पेंटागन रक्षा मुख्यालय पर आतंकवादी आक्रमण हुआ। इस आक्रमण में अलकायदा व तालिबान के हाथ होने की पुष्टि की गई। इस आतंकवादी 9/11 घटना के जवाब में अमेरिकी राष्ट्रपति जूनियर जार्ज बुश ने कठोर कार्यवाही की घोषणा की। Operation Enduring Freedom कार्यक्रम चलाया गया। इस अभियान में मुख्य निशाना अलकायदा और अफगानिस्तान के तालिबान शासन को बनाया गया। अमेरिकी सेना ने आतंकवाद के नाम पर पूरे विश्व में

गिरफ्तारियां की। D.खाड़ी संकट-II:- अमेरिका ने UNO की अवहेलना कर 20 मार्च 2003 को ईराक पर आक्रमण किया और 14 अप्रैल को ईराक में सद्दाम हुसैन को समाप्त कर दिया। अंततः 2006 में सद्दाम हुसैन को फांसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया। आज भी इराक पर अमेरिकी नियंत्रण कायम है।USA इसके माध्यम से पश्चिम एशिया के तेल संसाधनों को अपने नियंत्रण में ले रहा है। इस प्रकार अमेरिका नई विश्व व्यवस्था की स्थापना के लिए सीधे तौर पर सैनिक कार्यवाही की नीति को अपना रहा है।

२.अमेरिकी प्रभुत्व और प्रभाव:- अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व को बनाए रखने के लिए सीधी कार्यवाही के साथ-साथ वर्चस्व की नीति भी अपना रहा है। अमेरिकी वर्चस्व को निम्नलिखित तीन रूपों में देखा जा सकता है-

A. सैनिक वर्चस्व:- अमेरिका के एक प्रमुख कारण सैन्य वर्चस्व है। अमेरिका का रक्षा बजट 12 देशों के कुल बजट के बराबर है। इसके अतिरिक्त अमेरिका अपने बजट का बड़ा भाग रक्षा अनुसंधान पर खर्च कर रहा है। उसके पास सतह से हवा में मार करने वाली Patriot जैसी मिसाइलें हैं तथा मिसाइलों के वार को रोकने वाली राष्ट्रीय प्रतिरक्षा प्रणाली NMD भी है। अमेरिकी सैन्य प्रभुत्व का आधार सिर्फ उच्च सैन्य व्यय नहीं बल्कि गुणात्मक बढ़त भी है।USA आज सैन्य प्रौद्योगिकी के मामले में इतना आगे है कि किसी और देश के लिए इस मामले में उसकी बराबरी कर पाना संभव नहीं है। अमेरिकी सैन्य वर्चस्व का एक प्रमुख पहलू अमेरिकी सशस्त्र सेनाओं की पूरे विश्व में फैली कमान भी है।

अमेरिका की दक्षिण कमान
अमेरिका की उत्तरी कमान
अमेरिका की केंद्रीय कमान
अमेरिका की यूरोपीय कमान
अमेरिका की पेसिफिक कमान

B.आर्थिक वर्चस्व:-अमेरिकी अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। विश्व के व्यापार में अमेरिका की 75% हिस्सेदारी है। अमेरिका का आज अधिकांश समुद्री व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण है। अमेरिका का अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में भी प्रभाव है। साथ ही NAFTA के माध्यम से भी वर्तमान वैश्वीकरण युग में अपना वर्चस्व बना रहा है। आज विश्व के अधिकांश देशों में अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पाद बेच रही हैं। अमेरिकी अर्थव्यवस्था की ताकत का एक मानक उदाहरण MBA की डिग्री है यह विशुद्ध रूप से अमेरिकी धारणा है। अमेरिका में MBA का पाठ्यक्रम 19 वीं सदी में प्रारंभ हुआ जबकि अन्य देशों में 1950 के बाद प्रारंभ हुआ।

C.सांस्कृतिक वर्चस्व:- USA वैश्वीकरण के युग में IT के माध्यम से अपनी संस्कृति का फैलाव कर रहा है। इसके कारण अमेरिकी संस्कृति और उत्पाद आज उच्च जीवन के

मुल्य बन गए हैं।
यद्यपि आज USA एक ध्रुवीय विश्व को बनाए रखने का यथासंभव प्रयास कर रहा है तथापि अमेरिका को आंतरिक चुनौतियों यथा आर्थिक संकट, स्वतंत्र समाज तथा प्रेस की स्वतंत्रता से निपटना पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त रूस व चीन भी अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती दे रहे हैं तथापि अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व को बनाए रखने के लिए पूर्वी यूरोप में प्रभाव जमा कर उसकी शक्ति को न्यूनतम करने का प्रयास कर रहा है और भारत जैसे राष्ट्र को अपने पाले में करने का भरपूर प्रयास कर रहा है।